मोहन राकेश की कहानियों में सामाजि चेतना

ए.शौकत अली

असोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एस.डी.जी.एस. कालेज, हिन्दूपुर-515201.
जिला अनन्तपुर, आन्ध्र प्रदेश, भारत ।

सारांश

कहानी की सामाजिकता के संदर्भ में प्रसिध्द आलोचक अमृतराय कहतें हैं कि "किस्सा कहने का सुनने की आदिम भूख से ही कहानी का जन्म हुआ है, और अपने इस जन्मजात गुण या स्वभाव की रक्षा करके ही वह जीवित रह सकती है । क्यों कि कहानी सामाजिक विधा है, जन्म से ही । एक आदमी कहानी कहता है, दूसरा आदमी सुनता है; वही दुसरा अदमी समाज है और यही कहानी की सामाजिकता का आधार है"[1] समाज के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं है तथा समाज की बुनियाद ही मनुष्य है । समाज और मनुष्य एक दूसरेके पूरक हैं । मनुष्य सामाजिक और विचारात्मक प्राणी है । वह अपनी अनेकानेक आवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा करता है ।

स्वातंत्र्योत्तर समाजिक परिवेश कई विघटनों एवं निर्माण की सीढ़ियों को पार करता हुआ दिखाई पडता है । इसके पीछे कारण अनंत रहे है फिर भी मूलत: देश विभाजन, बदलती राजनैतिक चेतना, देश की भौगोलिक सीमाओं का विघटन, आर्थिक दुष्चक्र, बेकारी, औद्योगीकरण, तकनीकीकरण, महानगरों में जन संख्या की वृध्दि, नारी जागृति और शिक्षा का बढ़ता प्रभाव आदि कारण प्रमुख रहे हैं । इसके परिणाम स्वरूप समाज में बिखराव आने से व्यापक परिवर्तन हुआ । जैसे कि संयुक्त परिवार का टूटना, दाम्पत्य जीवन एवं वैयक्तिक जीवन धारा में अनेक परिवर्तन आदि देखे जा सकते हैं ।

सन् 1950 के आसपास की कहानियाँ जिसे 'नयि कहानी' के नाम से जाना जाता है, इसी संदर्भ को विषय बनाकर लिखी गयी हैं । इस कहानी ने पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरुष के बनते-बिगडते संबंध, अर्थ का बढ़ता प्रभाव, व्यक्ति में निराशा, कुंठा, असुरक्षा, मानसिक तनाव, अविश्वास, दायित्वहीनता आदि को सशक्त स्वर द्वारा उभारा हैं । "नई कहानी में पारिवारिक विघटन तो है ही सामाजिक जीवन से बिगड़ते संबंध बिखरने लगे, उस बिखराव को टकराहट के कारण अनेक है । जिसमें अर्थाभाव, स्त्री की जीविकोपार्जन में सहयोग देने की भूमिका, नौकरी के कारण बदलती हुई मानसिकता का यथार्थ चित्रण उसके विभिन्न परिणामों के साथ चित्रित हुआ है । इसमें टूटते हुए पुरुष की तरह बिखरती नारी का भी चित्रण है "[2]

मूल शब्द: विघटन, बुनियाद, प्रभाव, स्वभाव

प्रस्तावना

मोहन राकेश युगचेता कहानीकार हैं । वे अपने परिवेश के प्रति गहरी जागरूकता लिए हैं । जो उनके साहित्य को सहज ही सामाजिकता से संलग्न कर देता है । डॉ. धनुंजय वर्मा के शब्दों में "इनकी कहानियों में युग के सामाजिद यथार्थ और वस्तु सत्य के संदर्भ में जीवन की प्रतिक्रिया, अदलते हुए विश्वासों को गति देती चेतना और एक संक्रमणशील दृष्टि मिलती है, लेकिन मूल्यों की इस संक्रांति में भी

विघटन और ध्वंश की गति और टूटते ढहते विश्वासों की कगारों पर भी एक आंतरिक मानवीय आस्था और निष्ठा एवं दृष्टि का संकेत भी उनकी कहानियों में मिलता है ।"[3]

मध्यवर्गीय समाज की अनेक समस्याओं को राकेशजी ने अपने समग्र साहित्य में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अधिकतर नगरीय जीवन को अपने साहित्य का आधार बनया है । साथ ही बहुत सीमित स्तर पर ग्राम बोध भी प्राप्त होता है । दाम्पत्य एवं पारिवारिक समस्याओं को राकेशजी ने अपने साहित्य में अधिक महत्व दिया है । "राकेशजी की कहानियाँ कहानी क्षेत्र में आये नवीन मोड़ का प्रतिनिधित्व करती है । इसमें जीवन के मध्यम से कहानी और कहानी के माध्यम से जीवन की खोज की गायी है । आज की स्तितियाँ किस प्रकार और किन स्तरों पर कहानीकार को छूती है, इसका आँकलन वस्तुत: समाज के नैतिक और आध्यात्मिक रूप से परिचय प्राप्त करता है । राकेशजी की कहानियाँ समाज के परिप्रेक्ष्य में उनकी जीवन संचेतना को व्यक्त करती है ।"[4]

पति-पत्नी के संबंधों की समस्या :

पति-पत्नी का रिश्ता तन-मन से जुड़ा एक संपूर्ण खूबसूरत व पूरक रिश्ता है । अदि दोनों का सुख्द साथ ज़िन्दगी व परिवार को आनंद से भर देता है तो उसे सफल दाम्पत्य जीवन कहा या माना जाता है । सफल दाम्पत्य जीवन खूबसूरत फूलों की सेज के समान है, किन्तु जब पति-पत्नी के बीच कभी-कभी कुछ कारणों सेर वैशम्य बढ़ने लगते है तब-तब यह फूल गिरने लगते है, मुरझाने लगते है । कभी-कभी तो सुन्दर फूलों की जगह कैक्टस उगे नज़र आने लगते हैं । फिर उसकी चुभन दाम्पत्य संबंधों को खोखला बनाकर टूटने की कगार पर पहुँचा देती है ।

हमारी पारंपरिक मान्यता है कि शादियाँ स्वर्ग में तय होती है । पति-पत्नी तब साथ निभाते हैं, जब तक किसी एक का स्वर्ग से बुलावा न आ जाए । फिर कहाँ हो जाती है भूल-चूक कि कल तक जहाँ खुशियों की वर्षा हो रही थी वहाँ मायूसी के बादल गहरा जाते हैं । साथ ही जिदगी के कदम शिथिल हो जातें हैं और तब 'अब और नहीं' की सोच जन्मांतर तक साथ रहने का वादा बन जाता है सिर्फ 'तेरा-मेरा इरादा' कैसे आ जाती है, रिश्तों में दरारे भी आजातें है, ऐसे क्या हो जाता है कि एक अनचाहा तूफान सब-कुछ तितर-बितर कर देता है । जहाँ भावना, संवेदना, सुख-दु:ख सब बेमानी हो जाती है । राकेशजी ने अपनी कहानियों में इसी तथ्य को प्रकाश में लाने की कोशिश की है । बदलते समय प्रवाह में आज देखे तो नैतिक मूल्यों की परवाह में बिना स्त्री-पुरुष मनमाने ढंग से स्वतंत्र जीवन जीने लगे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप वैवाहिक संस्थान की अनिवार्यता को प्रश्नचिन्हों के कटघरे में खड़ा कर किया है। क्योकि जहाँ पर पारस्परिक विश्वास न हो, सुख-दु:ख भागी दृष्टिकोण न हो, समर्पण और त्याग न स्वीकारा जाता हो "वहाँ विवाह, मीनिंग्लैस सी रस्म तो होगा ही । अज विवाह एक समझौता है पति का पत्नी से, पत्नी का पति से । इस संधिपत्र पर हस्ताक्षर करके निर्वाह करना दोनों का दायित्व है ।"[5]

आज आधुनिक परिवार में पति-पत्नी के बीच संबंध हीनता और अन्त: संघर्ष का स्वरूप बहुतायन से देखने को मिल रहा है । पति-पत्नी अतिपरिचय और अतिनिकटता के सूत्र में बंधकर भी अजनबीपन और मेहमानगिरी की सूत्रता के निर्वाह की नियति से अभीशप्त है । दोनों एक-दूसरे के होने में नहीं, न होने के बोध से टूटते हैं । उनके बीच अगर कहीं संबंध के दु:ख दर्द की झलक है तो कथिक स्तर पर लेकिन अंदर से सभी संबंध-सूत्र नष्ट हो चुके हैं ।

मोहन राकेश की कहानियाँ विषम जीवन की गंभीर भूमिका का सफल निर्वाह करने में सक्षम रही हैं। राकेशजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से सार्थक अनुभवों और पैनी दृष्टि से पति-पत्नी के संबंध विषयक समस्याओं को विशेषरूप से पहचान कर उसे रेखांकित किया है । पति-पत्नी के संबंधों को लेकर लिखी

गयी राकेशजी की कहानियों में उनके संबंधों की विडंबनाओं को अलग-अलग स्तरों पर पकड़ने का प्रयत्न किया है और उन्हें इसमें पर्याप्त सफलता भी मिली हैं ।

अस्तित्व बनाएँ रखने की लालसा और अहं :

आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष की बैध्दिकता ज्यों-ज्यों बढ़ती चली जा रही है, त्यों-त्यों उसका अहंभाव और अस्तित्व बोध तीव्र से तीव्रतर और व्यापक से व्यापकतर रूप ग्रहण कता चला जा रहा है । यह भावना पति-पत्नी के बीच एक तनाव की स्तिति निर्मित कर केती है। 'एक और ज़िन्दगी' राकेशजी की इस समस्या को प्रस्तुत करनेवाली सफल कहानी है । इस कहानी में असफल दाम्पत्य संबंध के कारण पति-पत्नी का अहं और समान व्यक्तित्व की टकराहट है, जिसे राकेशजी ने सूक्ष्मता से विश्लोषित किया है । कहानी का नायक प्रकाश अपनी मर्जि से बीना के साथ विवाह करता है । कुछ ही दिनों बाद यह बंधन दोनों के लिए परेशानी का कारण बन जाता है । दोनों के बीच एक-दूसरे के प्रति 'अण्डरस्टांडिंग' का विकास नहीं हो पाता जो प्रणय संबंधों को जोड़े रखता हैं । परिणामत: "व्याह के कुछ ही महीने बाद से ही पति-पत्नी अलग रहने लगे थे । व्याह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ नहीं सका था । दोनों अलग-अलग जगह काम करते थे और अपना-अपना स्वतंत्र ताना-बाना बुनकर जी रहे थे । लोकाचार के नाते साल छ: महीने में कभी एक बार मिल लिया कर थे ।"[6]

दोनों के बीच ऐसी स्तिति बन जाती है कि अब कुछ और संभव ही नहीं रहता। "एक अनिवार्य अलगाव और बाद में 'कोर्ट' द्वारा स्विकृत तलाक के सिवा उनके बीच का सेतु उनका बच्चा भी इससे उन्हें नहीं बचा पाता ।"[7] प्रकाश पति और पिता का अधिकार चाहता है । इस पर बीना का कहना है कि - "अगर आपके पास पिता का दिल होता तो आप पार्टी में न आते ? यह तो आकस्मिक घटना है कि आप इसके पिता हैं ।"[8] बीना किसी भी हालत में प्रकाश का अधिकार प्रकाश को सौंपने के लिए तैयार नहीं होती । प्रकाश सोचता है कि बच्चे के लिए फिजूल की भावुकता में कुछ नहीं रखा । संबंध विच्छेदन के बाद फिर से ब्याह कर लिया जाए, तो घर में और बच्चे आ जाएँगे । "मन में इतनाही सोच लेना होगा कि इस बच्चे के साथ कोई दुर्घटना हो गई थी... ।"[9]

तलाक के ढ़ाई साल बाद प्रकाश एक और जिन्दगी प्रारंभ करने के विषय में सोचता है । उसका मानना है कि जब एक विवाह सफल नहीं हुआ तो जरूरी नहीं कि दूसरा भी सफल न हो। लेकिन वह पहले कि भूल दोहराना नहीं चाहता था, इसलिए उस्की आशंका ने उसे बहुत सतर्क कर दिया जीवन बिता सकता है जो हर लिहाज से बीना के उलट हो ।"[10] प्रकाश अपने मित्र जुनेजा की बहन निर्मला को दूसरी पत्नी के रूप में चुनता है और अपने नये जीवन की शुरुआत करता है । कुछ ही दिनों में प्रकाश के सामने निर्मला का मानसिक विषम्य रूप आता है । निर्मला का यह रूप प्रकाश द्वारा प्रारंभ की गयी जिन्दगी के प्रयत्न को काफी करुणाजनक प्रमाणित कर देता है ।

व्यावसायिक व्यस्तता और महत्वकांक्षा :

बदलते हुए समय की बदलती परिस्थितियों के साथ-साथ ही मनुष्य की इच्छाओं और आवश्यकताओं में भी परिवर्तन हो रहा है । आज के युग में पैसे का महत्व अधिक बढ़ता जा रहा है । पैसे और प्रतिष्ठा पाने की महत्वकांक्षा व्यक्ति में अथिक प्रगति होती जा रही है । आज के समय में स्त्री और पुरुष में यह भावना समान रूप से मिलती है जिससे उनके संबंधों में तनाव, बिखराव और आसांमजस्य की स्थितियाँ पैदा हो गयी है । "मोहन राकेश के साहित्य में भी संबंधों में तनाव का बहुत बड़ा कारण प्रत्येक का महत्वकांक्षी होना है । महत्वकांक्षा का दबाव इतना अधिक होता है कि परिवार पति-पत्नी का संबंध गौण हो गया है । इसके लिए यदि उन्हें घर भी छोडना पडे तो वे इसके लिए भी तैयार हैं । वे अपनी इच्छाओं

का दमन करना स्वीकार नहीं करते । मुख्यत: मध्यमवर्गीय व्यक्ति में महत्वकांक्षा इतनी अधिक होती है कि वह हंमेशा असंतुष्ट रहता है । एक लक्ष्य प्राप्त के बाद दूसरे को पाने की अनकी इच्छा उनमें कुण्ठित भावनाएँ पैदा करती रहती है । "[11]

'फौलाद का आकाश', 'आखिरी सामान', 'गुंझल', 'एक और जिन्दगी', 'अपरिचित', अदि जैसी कहानियों में राकेशजी ने महत्वकांक्षा और व्यावसायिक व्यस्तताओं के कारण उत्पना आजकी ज़िन्दगी की कड़वी छटपटाहट को यथार्थ रूप मे रेखांकित किया है । 'फौलाद का आकाश' कहानी का पति रवि सिर्फ 'केरियरिस्ट' व्यवसायिक स्वार्थी बन गया है । जिसे सिर्फ अपने आपसे ही मतलब है । मीरा की इच्छाओं और भावनाओं के लिए उस्सके पास कोई समयु नहीं है और इस दिशा में सोचने की वह जरूरियात भी महसूस नहीं करता । रवि के लिए मीरा सिर्फ घर संभालने के लिए, खाना बनाने के लिए और शरीरिक भूख मिटाने का साधन मात्र है । रवि मीरा से सिर्फ कयिक अस्तर पर ही जुड़ा हुआ है । मीरा की इच्छा अपना बच्चा पाने की है, किन्तु रवि हर बार मीरा को बच्चे से दूर ही रखना चहाता है, क्योंकि उसका व्यवसाय ही उसके लिए सब कुछ है, मीरा की अन्य इच्छा या मीरा की बच्चा पाने की इच्छा का उसकी दृष्टि में कोई महर्व नहीं है। रवि और मीरा के बीच की यह स्थिति उनके परिवार में एक प्रकार का तनाव पैदा करती है।

भुन्न मानसिकता :

पति-पत्नी के बीच उद्देश्यों की, अभिरुचियों की, स्वभाव की तथा व्यक्तिगत आसांक्षाओं में एकता होनी चाहिए । उनके अभाव में पति-पत्नी के बीच असामंजस्य, कलंक और लड़ाई झगड़े होने लगते हैं । राकेशजी की कहानियों में कई ऐसे पात्र हैं जो अपनी स्वाभाविक भिन्नता के कारण पति-पत्नी के रूप में सामंजस्य नहीं साध पाते । दोनों ही अपने अस्तित्व को अधिकाधिक महत्व देते है । वे सामने वाले को अपने अनुसार बदलने की कोशिश करते हैं किन्तु खुद उनके विचारो के अनुसार बदलने की कोशिष नहीं करते । यही कारण है कि तति-पत्नी का संबंध में बिखराव की स्थिति पर पहुँच जाता है या तो टूट जाता है ।

राकेशजी के साहित्य में पति-पत्नी के संबंधों में बढ़ते तनाव और अजनबीपन का एक प्रमुख कारण दोनों की भीन्न प्रकृतियाँ हैं । इसे कहानीकार ने अपने कहानियों में विभिन्न कोणों से उठाने का प्रयास किया है । इस दृष्टि से राकेशजी की 'अपरिचित' कहानी अपना विशेष स्थान रखती है । 'अपरिचित' कहानी में यह समस्या दो दंपतियों के माध्यम से सशक्त रूप में सामने अयी है । इसमें दीशी और दीशी पत्नी तथा कथानायक 'मैं' और उसकी पत्नी नलिनी ।

'अपरिचित' कहानी का पति दीशी चाहता है कि उसकी पत्नी गुमसुम न रहे, लोगों से मिले, हँसे बोले और सभी से घलमिल जाये । क्लब और पार्टियों में उसके साथ जायें यह सब दीशी अपनी पत्नी के लिए चाहता था । क्योंकि दीशी कोप क्लब, संगीत, सोसायटी के बीच रहना, पार्टियों में जाना सबके साथ बातचीत करना ब अहुत अच्छा लगता है । लेकिन उसकी पत्नी एकांतप्रिय है । अत: दीशी के साथ पार्टियों में और क्लब में जाने से उसका दम घुटता है । वह मौन रहकर स्पर्श की भाषा से ही अपनी बात कहना चाहती है । बरसात में भिगना, पर्वतों पर घूमना, बच्चों के साथ घुल्मिल जाना उसे अच्छा लगता है । वह आदर्श पत्नी बनी रहना चाहती है, क्योंकि वह संस्कारों का आदर करती है । दीशी पत्नी दीशी की विदेश जाने की इच्छा को अपने गहने बेचकर पूरी करती है । लेकिन वह उसकी भावनाओं की कद्र तक नहीं करता । वह दीशी को खुश-रखने का भरपूर प्रयास करती है वह इस संबंध में कहती है - "मैं हजार चाहती हूँ कि उन्हें खुश दिडाई दूँ और इनके सामने कोई न कोई बात करती रहूँ, लेकिन मेरी सारी

कोशिशें बेकार चली जाती हैं । इन्हें फिर गुस्सा आ जाता है और मैं रो देती हूँ । इन्हें मेरा रोना बहुत बुरा लगता है ।"[12] दीशी अपनी पत्नी को अपनी प्रकृति से भिन्न पाकर विदेश चला जाता है तो दूसरी तरफ कथानायक 'मै' भी अपनी पत्नी से अलग रहकर अपना जीवन निर्वाह कर रहा है। किन्तु जब कथानक 'मै' और दीशी पत्नी ट्रेन में मिलते है तब दोंओं एक दूसरे से खुलकर बाते करतें हैं । करण, दोनों के बीच एक सी रुचियों का आभास सा है ।

प्रेम एवं यौन संबंधों का प्रभाव :

पति-पत्नि के दाम्पत्य्ह संबंधों में बनते, बिगडते रिश्तों में यौन एवं प्रेम का अधिक प्राबल्य रहता है। पति-पत्नी के बीच के सामंजस्य का बहुत बड़ा अधार दोनों के बीच प्रेम एवं यौन संबंधों की संतुष्टि है । किन्तु जहाँ पति-पत्नी के बीच इस संबंध में कमी है वहाँ दोनों के बीच अलगाव और असामंजस्य ज्यादा है ।

'गुजाह बेलज्जत ' कहानी की समस्या परिवेशगत लगते हुए भी प्रेम या सेक्स के कारण ही है । अतृप्त यौन आकांक्षा सरदार सुन्दरसिंह और उसकी पत्नी भागवन्ती के बीच दूरी और तनाव का मुख्य कारण है । सुन्दरसिंह अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता क्योंकि वह सुन्दर नहीं है । साथ ही भागवन्ती भी अपने पति की मर्यादा को जानती है । अत: पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति उपेक्षित व्यवहार करते है। फलत: सुन्दरसिंह और भागवन्ती के बीच का संबंध सिर्फ दिखावा मात्र बन गया है । भागवन्ती की गैरमौजूदगी में सुन्दरसिंह पेशेवर लड़की सुन्दरी को अपने घर बुलाकर अपने बरसों के अरमान पूरे करने की कोशिश करता है । यद्यपि अपनी शरीरिक कमियों के कारण सुन्दरसिंह को इसमें भी कामयाबी नहीं मिलती । एक दिन जब वह सुनता है कि सुन्दरी और उसके साथी पकड़े गये है और सुन्दरी उन सबके नाम बता रही है जिसके साथ उनके शरीरिक संबंध रहे थे । सुन्दरसिंह इस बात से घबराकर सुन्दरी के घर आने की बात भागवन्ती को बताता है । तब भी भागवन्ती पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता । वह सुन्दरसिंह की ओर उपेक्षपूर्ण दृष्टि से देखती है ।

'सुहागिनें' की कहानी की मनोरमा की नौकरानी काशी अपने पति के पठानकोट चले जाने पर अकेली नौकरी करके अपने तथा अपने बच्चों का गुजारा करती है । काशी के पति ने वहाँ दूसरी स्त्री रख ली है । फिर भी काशी अपने पति से जुड़ी रहती है क्योंकि साल दो साल में जब भी अयोध्या ठेका देने के लिए आता तब काशी के साथ उसके शारीरिक संबंध बनते थे । फिर भी शारीरिक संबंध और बच्चे होने के कारण काशी अपने पति से जुड़ाव महसूस करती है । इसके विपरीत मनोरमा अपने पति से अलगाव महसूस करती है ।

निष्कर्ष :

राकेशजी ने अपनी कहानियों में संक्रमणशील समाज में ही रहे मूल्य विघटन की प्रक्रिया के संबंधों मे आये बिखराव और संबंधों को ठोस धरातल पर स्थापित करने की कठिनाईयों को विविध पहलुओं से अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है । मानव मन, आस्था, विश्वास एवं भावनात्मक गहराई के अभाव में कमजोर होता जा रहा है। प्रेम संबंधों में से प्रेम का नामो-निशान ही मिट गया है । दाम्पत्य संबंधों में अहं विस्फोट हो रहे हैं । भवनात्मक संबंधों में निरंतर कृत्रिमता आ रही है । महत्वकांक्षा और परिवेशगत दबावों में पति-पत्नी के संबंध कैसे बनते-बिगड़ते है, इसका यथार्थ निरूपण राकेशजी की कहानियों में हुआ है। राकेशजी ने परिवारिक संबंधों की निरर्थकता की ओर भी संकेत किया है । परिवार टूट रहे है । माँ-

बेटा, भाई-बहन, पति-पत्नी, माँ-बिटी आदि जैसे स्नेहपूर्ण संबंध भी अब नाम मात्र के रह गये है । परिवारिक सभ्यता का आधार ही हिल गया है ।

इस संक्रमणकाल में मूल्यों का सिघटन इतनी तेजी से हुआ है कि कोई भी मूल्य महत्वपूर्ण नहीं रहा है । विवाहपूर्ण, विवाहेतर, प्रेम स्वरूप को राकेशजी ने अपनी कहानियों में पुरुष नारियों को समान रूप से उक्त संबंधों से ग्रस्त बताया है । किसी का भी प्यार गहरा नहीं है क्योंकि सभी को क्षणिक सुख की तलाश है, सभी आत्मकेन्द्रित है । अत: सभी व्यक्ति चाहे वह स्वतंत्र हो या दाम्पत्य संबंधों में बंधा हुआ दुखित एवं परेशान है ।

अतंत: कहा जा सकता है कि राकेशजी ने अपनी कहानियों में जिन विविध दृष्टिकोण से मानवीय संबंधों और समाज की विविध समस्याओं का विश्लेषण किया है, उसने समाज की बखियाँ उघेड़ कर रख दी है । राकेशजी की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ के साथ पूर्ण गहराई से जुड़ी हुई है ।

संदर्भ सूची :

1.हिन्दी कहानी पहचान और परख - अमृतराय, सं. इन्द्राथ मदान, पृ. 76
2.मोहन राकेश और उनका साहित्य - डॉ. कविता शनवरे , पृ. 72
3.नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति - सं. देवीशंकर अवस्थी, पृ. 191
(राजकमल प्रकाशन प्रा. ली., विभी प्रथम आवृत्ति, पृ. 207)
4.मोहन राकेश व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. सुष्मा अग्रवाल, पृ. 206
5.कथा लेखिका मन्नू भंडारी - डॉ. व्रज मोहन मिश्र, पृ. 49
6.मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, 'एक और जिन्दगी, पृ. 278
7.हिन्दी कहानी का समाज शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. रघुवीर सिन्हा, पृ. 69
8.मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, एक और ज़िदगी, पृ. 278
9. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, एक और ज़िदगी, पृ. 279
10. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, एक और ज़िदगी, पृ. 281
11.मोहन राकेश का साहित्य संबंधों के विच्छेदन की स्थितियाँ, डॉ. सुनीता श्रीमाल, पृ. 153
12.मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, 'अपरिचित' पृ. 92

- - -